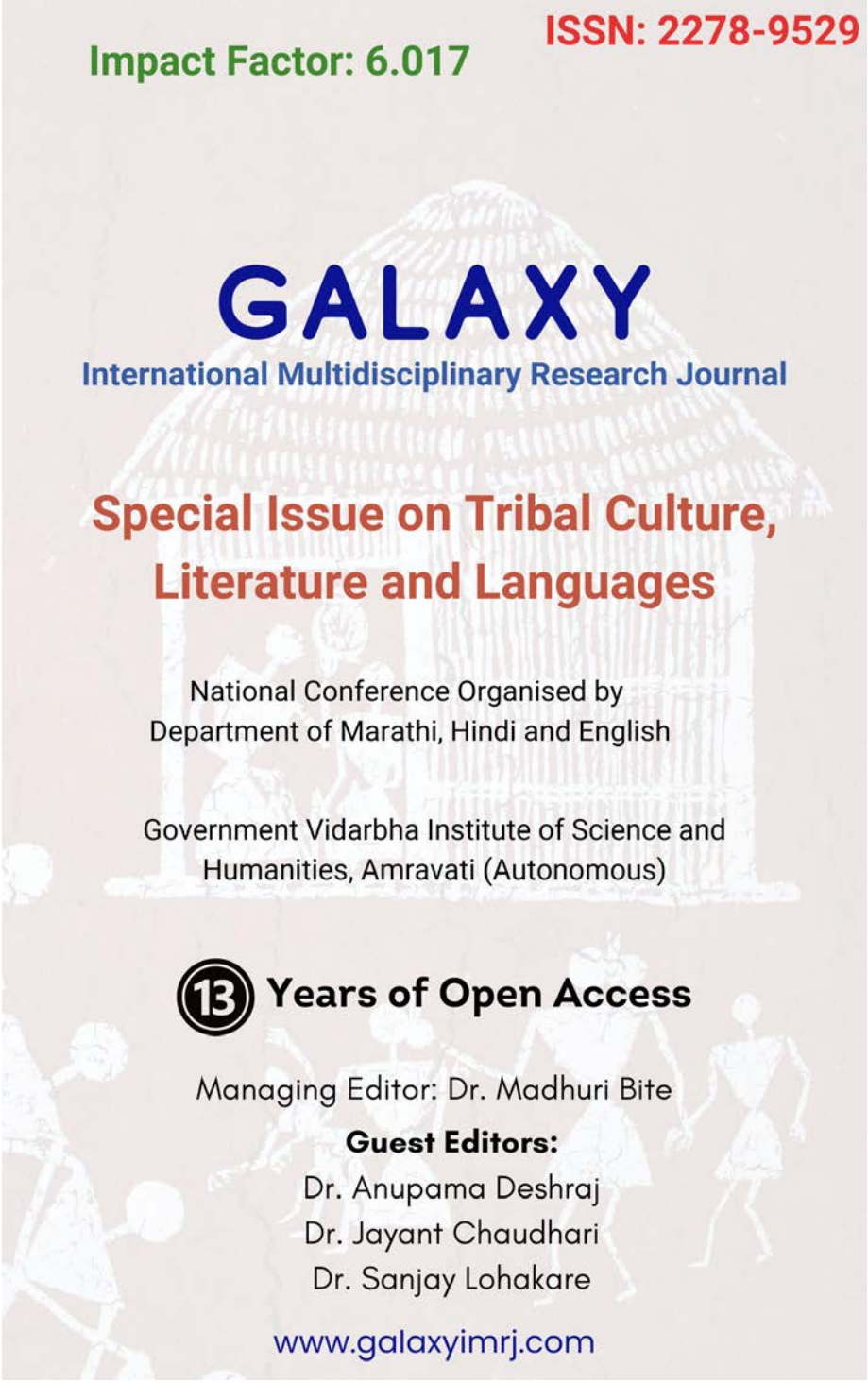

About Us: http://www.galaxyimrj.com/about-us/
Archive: http://www.galaxyimrj.com/archive/
Contact Us: http://www.galaxyimrj.com/contact-us/
Editorial Board: http://www.galaxyimrj.com/editorial-board/
Submission: http://www.galaxyimrj.com/submission/
FAQ: http://www.galaxyimrj.com/faq/

आदिवासी विद्यालयों में गैर-आदिवासी शिक्षकों की सांस्कृतिक संवेदनशीलता

अभय कुमार
पी-एच.डी. (शिक्षाशास्त्र),
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविधालय वर्धा,
महाराष्ट्र.

शोध सार

भारत एक बहुसांस्कृतिक देश है जहां विभिन्न भाषाएं, संस्कृतियां, और समुदाय रहते हैं। इस विविधता में आदिवासी समुदाय एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।आदिवासी समाज की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, परम्पराएं,और जीवनशैली होती है, जो कि समाज की मुख्यधारा से अलग होती है। आदिवासी बच्चों के लिए शिक्षा का महत्व केवल साक्षरता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनके सांस्कृतिक, सामाजिक, और नैतिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। इस संदर्भ में, गैर-आदिवासी शिक्षकों की सांस्कृतिक संवेदनशीलता एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन जाती है। सांस्कृतिक संवेदनशीलता का अभाव अक्सर आदिवासी विद्यार्थियों के बीच आत्मसम्मान की कमी और शिक्षा में उनकी रुचि कम होने का कारण बनता है। गैर-आदिवासी शिक्षक, यदि आदिवासी संस्कृति की समझ और सम्मान के साथ नहीं पढ़ाते, तो वे अनजाने में ही विद्यार्थियों के प्रति भेदभाव कर सकते हैं। इससे शिक्षा की गुणवत्ता पर असर पड़ता है और विद्यार्थियों की पढ़ाई में अरुचि उत्पन्न होती है,क्योंकि यह सीधे आदिवासी बच्चों की शिक्षा की गुणवत्ता और उनकी संस्कृति के संरक्षण पर प्रभाव डालती है।

प्रस्तुत शोध आलेख आदिवासी विद्यालयों में गैर-आदिवासी शिक्षकों की सांस्कृतिक संवेदनशीलता के प्रति समझ विकसित करने का प्रयास किया गया है तथा यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि गैर-आदिवासी शिक्षक आदिवासी विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को कितनी गहराई से समझते हैं और इसका शिक्षा प्रक्रिया पर क्या प्रभाव पड़ता है। गैर-आदिवासी शिक्षकों के लिए सांस्कृतिक प्रशिक्षण और संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं। इसमें आदिवासी समुदाय की संस्कृति, भाषा और जीवन शैली के बारे में विस्तृत प्रशिक्षण, स्थानीय समुदाय के साथ बातचीत और उन्हें शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करना। इसके अलावा, शिक्षा प्रणाली में भी सुधार की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आदिवासी विद्यार्थियों को उनकी सांस्कृतिक पहचान का सम्मान करते हुए उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्राप्त हो।साथ ही शिक्षको के प्रति सांस्कृतिक संवेदनशीलता

के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव क्या पड़ते है तथा सांस्कृतिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए क्या संभावित समाधान या उपाय हो सकते है इस पर तर्कसंगत विचार लेखक द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द – आदिवासी, आश्रमशाला (विद्यालय), विद्यार्थी , शिक्षक, सांस्कृतिक संवेदनशीलता

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। यह व्यक्ति को ज्ञान, कौशल और मूल्यों से संपन्न बनाती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति समाज में अपना योगदान देता है और राष्ट्र के विकास में भी भागीदार बनता है।

आदिवासी समुदायों के लिए शिक्षा न केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम है, बल्कि उनकी संस्कृति, परंपराओं और पहचान को बनाए रखने का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। भारत में, आदिवासी (आश्रमशाला) विद्यालय इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं। ये आश्रमशाला न केवल औपचारिक शिक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि आदिवासी बच्चों को उनकी जड़ों से जोड़ते हुए उन्हें एक समग्र विकास का अवसर भी देते हैं।

भारत में सांस्कृतिक विविधता की समृद्ध धारा बहती है, जिसमें विभिन्न जनजातीय समुदायों की विशिष्ट संस्कृति, परंपराएँ, और जीवनशैली शामिल हैं। आदिवासी समुदायों का भारतीय समाज में विशिष्ट स्थान है। ये समुदाय अपने विशेष सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना के लिए जाने जाते हैं, जो समाज के मुख्यधारा से भिन्न होती है। आदिवासी बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में यह आवश्यक है कि उनके शिक्षक उनकी सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं के प्रति संवेदनशील रहें। आदिवासी विद्यालयों में पढ़ाने वाले गैर-आदिवासी शिक्षकों के लिए यह चुनौतीपूर्ण हो सकता है, क्योंकि उन्हें ऐसी संस्कृति और समाज में काम करना होता है जिससे वे भली-भांति परिचित नहीं होते।

सांस्कृतिक संवेदनशीलता की आवश्यकता इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ ज्ञान का प्रसार नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के साथ जोड़ना भी है। जब शिक्षक अपने छात्रों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझते और सम्मान करते हैं, तो यह उनके और विद्यार्थियों के बीच एक सकारात्मक और सहयोगात्मक संबंध को प्रोत्साहित करता है। इसके विपरीत, यदि शिक्षक सांस्कृतिक रूप से असंवेदनशील होते हैं, तो इससे विद्यार्थियों की शिक्षा में रुकावट आ सकती है और उनकी सांस्कृतिक पहचान पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

आदिवासी शिक्षा और आश्रमशाला (विद्यालय)

भारत में आदिवासी समुदायों की संख्या लगभग 10 करोड़ से अधिक है, जो देश की कुल जनसंख्या का लगभग 8.6% है। इन समुदायों की अपनी अलग-अलग भाषाएँ, परंपराएँ, और सामाजिक संरचनाएँ होती हैं। आदिवासी समाज की शिक्षा परंपरागत रूप से मौखिक और अनुभवात्मक रही है। उनके ज्ञान का स्रोत प्रकृति, स्थानीय संसाधन, और सामाजिक परंपराएँ होती हैं। आदिवासी शिक्षा का उद्देश्य आदिवासी समुदायों को सशक्त बनाना और उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ना है। शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार होती है, और आदिवासी समाज में यह अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, जहां परंपरागत ज्ञान और संस्कृति को संरक्षित करने के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा का समावेश भी जरूरी है।

आदिवासी शिक्षा के अंतर्गत विशेष रूप से उन मुद्दों पर ध्यान दिया जाता है, जो आदिवासी समुदायों के सामने हैं, जैसे- कि भाषा, संस्कृति, और सामाजिक पहचान। इन समुदायों के बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा प्रदान करना उनके बौद्धिक विकास में सहायक होता है। साथ ही, उनके पारंपरिक ज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन के कौशल को पाठ्यक्रम में शामिल करना आवश्यक है, ताकि वे अपनी सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रख सकें और अपने समाज की आर्थिक उन्नति में योगदान दे सकें।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली, जो मुख्यतः शहरी और गैर-आदिवासी संदर्भ में विकसित हुई है, आदिवासी छात्रों के लिए एक बड़ी चुनौती हो सकती है। यह प्रणाली अक्सर आदिवासी समाज की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को नजरअंदाज कर देती है। इस कारण से, आदिवासी छात्रों को न केवल शैक्षिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, बल्कि उन्हें अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने में भी संघर्ष करना पड़ता है।

आदिवासी विद्यालयों का उद्देश्य आदिवासी समुदाय के बच्चों को उनकी सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा की पहुंच सीमित होने के कारण, ऐसे विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जहां बच्चों को उनके अनुकूल माहौल में शिक्षा दी जाती है।

इन विद्यालयों में न केवल शैक्षिक ज्ञान पर ध्यान दिया जाता है, बल्कि आदिवासी बच्चों के पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक धरोहर को भी संरक्षित करने का प्रयास किया जाता है। बच्चों को उनकी मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा

देकर उनके बौद्धिक विकास को बढ़ावा दिया जाता है, जिससे वे अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए आधुनिक दुनिया में प्रतिस्पर्धा कर सकें।

सरकार और विभिन्न संगठनों द्वारा चलाए जा रहे ये विद्यालय आदिवासी बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। यहां न केवल शिक्षा बल्कि स्वच्छता, स्वास्थ्य, और पोषण जैसे बुनियादी मुद्दों पर भी ध्यान दिया जाता है, जिससे बच्चों का समग्र विकास हो सके। आदिवासी विद्यालय, बच्चों को आत्मनिर्भर बनाने और उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं, जो आदिवासी समुदाय के सतत विकास और सशक्तिकरण में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

गैर-आदिवासी शिक्षकों की सांस्कृतिक संवेदनशीलता

गैर-आदिवासी शिक्षक-

गैर-आदिवासी शिक्षक वह शिक्षक होते हैं जो किसी आदिवासी समुदाय से संबंधित नहीं होते हैं, लेकिन आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करते हैं। इन शिक्षकों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वे आदिवासी समुदायों को मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ने का प्रयास करते हैं। इन शिक्षकों के माध्यम से आदिवासी बच्चों को न केवल शैक्षिक ज्ञान प्राप्त होता है, बल्कि वे समाज के अन्य वर्गों से भी जुड़ते हैं। हालांकि, गैर-आदिवासी शिक्षकों के सामने कई चुनौतियाँ भी होती हैं। उन्हें आदिवासी संस्कृति, भाषा, और परंपराओं की समझ के बिना शिक्षा देना होता है, जिससे कभी-कभी छात्रों और शिक्षकों के बीच संवाद में समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इसके बावजूद, भी यदि वह शिक्षक स्थानीय संस्कृति और परंपराओं का सम्मान करते हुए अपने ज्ञान को साझा करते हैं, तो वे आदिवासी समाज में बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

सांस्कृतिक संवेदनशीलता-

सांस्कृतिक संवेदनशीलता का अर्थ है विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, विश्वासों, और मूल्यों के प्रति जागरूकता और सम्मान करना। यह एक ऐसा गुण है जो व्यक्ति को दूसरों की संस्कृति और जीवनशैली को समझने और स्वीकारने में मदद करता है, भले ही वह उनकी अपनी संस्कृति से भिन्न हो। सांस्कृतिक

संवेदनशीलता व्यक्ति, समाज और राष्ट्रों के बीच सामंजस्य और सहयोग को बढ़ावा देती है। शिक्षा के क्षेत्र में सांस्कृतिक संवेदनशीलता का विशेष महत्व है, क्योंकि शिक्षक छात्रों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

गैर-आदिवासी शिक्षक जब आदिवासी विद्यालयों में पढ़ाने आते हैं, तो उनके लिए यह जरूरी होता है कि वे उस समाज की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित हों, जिसमें वे कार्य कर रहे हैं। सांस्कृतिक असंवेदनशीलता के कारण कई बार शिक्षकों और छात्रों के बीच संचार की कमी होती है, जो कि शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है। सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षक न केवल छात्रों के साथ बेहतर संबंध स्थापित कर सकते हैं, बल्कि वे शिक्षा को अधिक प्रासंगिक और प्रभावी बना सकते हैं।

सांस्कृतिक संवेदनशीलता के नकारात्मक पक्ष-

यदि गैर-आदिवासी शिक्षक सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील नहीं होते हैं, तो इसके कई नकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं। जैसे कि-

- **भाषाई बाधाएँ**: आदिवासी समुदायों की अपनी मातृभाषाएँ होती हैं, जो अक्सर मुख्यधारा की भाषा से भिन्न होती हैं। गैर-आदिवासी शिक्षक इन भाषाई भिन्नताओं को समझने में कठिनाई महसूस कर सकते हैं, जिससे शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में अवरोध उत्पन्न होता है।
- **सांस्कृतिक पहचान का दमन**: गैर-आदिवासी शिक्षक, जो सांस्कृतिक संवेदनशीलता से रहित होते हैं, वे अनजाने में आदिवासी विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान को नजरअंदाज या दमन कर सकते हैं। यह विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान और सांस्कृतिक गर्व को प्रभावित कर सकता है।
- **शिक्षा में रुचि की कमी**: सांस्कृतिक असंवेदनशीलता के कारण, विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति रुचि की कमी हो सकती है। जब विद्यार्थियों को लगता है कि उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का सम्मान नहीं किया जा रहा है, तो वे शिक्षा से दूर हो सकते हैं।
- **सांस्कृतिक विस्मरण**: गैर-आदिवासी शिक्षक जो विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से अनभिज्ञ होते हैं, वे अनजाने में विद्यार्थियों को उनके सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं से दूर कर सकते हैं। यह सांस्कृतिक विस्मरण का कारण बन सकता है, जो लंबे समय में आदिवासी संस्कृति के संरक्षण के लिए खतरनाक हो सकता है।

सांस्कृतिक संवेदनशीलता के सकारात्मक पक्ष-

सांस्कृतिक संवेदनशीलता सकारात्मक रूप से विद्यार्थियों, शिक्षकों, और पूरे शैक्षिक वातावरण को प्रभावित करते हैं। जैसे कि-

- **बेहतर संचार**- जब शिक्षक सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील होते हैं, तो वे विद्यार्थियों के साथ बेहतर संवाद स्थापित कर सकते हैं। यह संवाद शैक्षिक और व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर होता है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है।
- **सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण**- सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षक विद्यार्थियों की सांस्कृतिक पहचान का सम्मान करते हैं और उन्हें अपनी सांस्कृतिक धरोहर पर गर्व महसूस कराते हैं। इससे विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान बढ़ता है और वे शिक्षा में अधिक रुचि लेते हैं।
- **शैक्षिक प्रासंगिकता**- सांस्कृतिक संवेदनशीलता के माध्यम से, शिक्षक शिक्षा को विद्यार्थियों की वास्तविक जीवन स्थितियों और अनुभवों के साथ जोड़ सकते हैं। इससे शिक्षा अधिक प्रासंगिक और प्रभावी होती है, जो विद्यार्थियों के लिए अधिक प्रेरणादायक साबित होती है।
- **सांस्कृतिक विविधता का समावेश**- सांस्कृतिक संवेदनशीलता को अपनाने से शिक्षा में सांस्कृतिक विविधता का समावेश होता है। यह विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों के प्रति जागरूक बनाता है और उन्हें विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने और सम्मान करने की क्षमता विकसित करता है।

सांस्कृतिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के उपाय

गैर-आदिवासी शिक्षकों की सांस्कृतिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं जो इस प्रकार है-

- **शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम**- गैर-आदिवासी शिक्षकों को आदिवासी समाज की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भाषा, और परंपराओं के बारे में जागरूक करने के लिए विशेष प्रशिक्षण

कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। यह प्रशिक्षण न केवल उनकी सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देगा, बल्कि उन्हें शिक्षा के प्रति अधिक संवेदनशील बनाने में भी मदद करेगा।

- **स्थानीय समुदाय के साथ सहयोग**- शिक्षकों को स्थानीय आदिवासी समुदाय के साथ जुड़ने और उनके साथ संवाद स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे वे समाज की सांस्कृतिक संवेदनाओं को बेहतर ढंग से समझ सकेंगे।
- **शिक्षा सामग्री में सांस्कृतिक विविधता का समावेश**- पाठ्यपुस्तकों और अन्य शिक्षा सामग्री में आदिवासी समाज की संस्कृति, इतिहास, और परंपराओं का समावेश किया जाना चाहिए। इससे छात्रों को अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति गर्व महसूस होगा और वे शिक्षा में अधिक रुचि लेंगे।
- **भाषाई संवेदनशीलता**- शिक्षकों को आदिवासी छात्रों की मातृभाषा की महत्ता को समझना चाहिए और जहां तक संभव हो, शिक्षा में इसे शामिल करने का प्रयास करना चाहिए।
- **स्थानीय संसाधनों का उपयोग**- शिक्षकों को आदिवासी समाज के स्थानीय संसाधनों और ज्ञान का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे शिक्षा अधिक प्रभावी और प्रासंगिक हो सकती है।
- **सांस्कृतिक समारोह और गतिविधियों का आयोजन**- विद्यालयों में सांस्कृतिक समारोह और गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए, जिनमें आदिवासी संस्कृति, संगीत, नृत्य, और कला को प्रमुखता दी जाए। इससे छात्रों में अपनी सांस्कृतिक पहचान के प्रति गर्व की भावना विकसित होगी।

विचार विमर्श -

विचार विमर्श के रूप में यह संज्ञान प्राप्त होता है की गैर-आदिवासी शिक्षकों की सांस्कृतिक संवेदनशीलता आदिवासी विद्यालयों में शिक्षा के स्तर को सीधे प्रभावित करती है। यह आवश्यक है कि शिक्षक आदिवासी संस्कृति की गहरी समझ और सम्मान के साथ शिक्षा प्रदान करें। इससे न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होगा, बल्कि आदिवासी विद्यार्थियों के आत्मसम्मान और शिक्षा के प्रति उनकी रुचि में भी वृद्धि होगी।इस दिशा में कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं,जैसे कि सांस्कृतिक संवेदनशीलता, सांस्कृतिक प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्थानीय समुदायों के

साथ साझेदारी, संसाधनों का विकास,और शिक्षा नीति में सुधार इसके अतिरिक्त शिक्षकों को कक्षाओं में जाने से पहले उन्हें अच्छी गुणवत्ता वाले सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में भाग लेना चाहिए जो पढ़ाए जाने वाले विषयों के ज्ञान तथा शिक्षण पद्धतियों के बीच ज्ञान के बीच संतुलन पैदा कर सकें। इन कदमों के माध्यम से हम आदिवासी विद्यार्थियों के लिए एक सकारात्मक और समावेशी शैक्षिक वातावरण बना सकते हैं, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखते हुए उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करेगा। यह अत्यंत गहन विचार का विषय है समाज के सभी शुभ चिंतको के लिए यह आवश्यक है की इस पर गंभीर विमर्श करते हुए समाज के इस वर्ग के अस्तित्व की महत्त्व को उचित स्थान दे एवं उनके शैक्षिक सामाजिक सांस्कृतिक विकास के लिए अपेक्षित कदम उठाये जाये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

गोयल , पी. (2016).शिक्षा के नाम पर उपेक्षा एवं दुर्व्यवहार. *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, II (49), 12-14.

पांडे के.पी.(2010). *शिक्षा की सामाजिक नींव में परिप्रेक्ष्य*. शिप्रा प्रकाशन, नई दिल्ली.

मल्याद्री, पी. (2012).एजुकेशन फॉर ट्राइबल चिल्ड्रेन:एन एंजाइन फॉर ह्यूमन डेवलपमेंट *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च* स्टडीज़ इन एजुकेशन,1(1),99-106

महास्नेह,ए.एम.,गज़ो, ए.एम., एवं अल-अदामत, ओ.ए. (2019). कल्चरल इंटेलिजेंस ऑफ़ द जॉर्डन टीचर्स एंड यूनिवर्सिटी स्टूडेंट फ्रॉम द हैशमाइट यूनिवर्सिटी:कम्पेरेटिव स्टडी. *यूरोपियन जर्नल ऑफ़ कंटेम्पररी एजुकेशन , 8* (2),303-314.

मिदताला रानी .(2009). *प्रोब्लम्स ऑफ़ ट्राइबल एजुकेशन इन इंडिया*. कनिष्क प्रकाशन, नई दिल्ली.

सिंह,ए.के.(1995).द कल्चरल कंस्ट्रक्शन ऑफ़ होम एंड स्कूल नॉलेज इन ट्राइबल इंडिया.प्रॉस्पेक्ट्स,25(4),735-747

https://www.asha.org/practice-portal/professional-issues/cultural-responsiveness/